Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11171094

Roll No. 24034000030
Total Mark 62/75.00
Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A320902T - History Staff NotationAndVoice Culture-I

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	5/5	7	14/15				
1B	4/5	8	0/15				
1C	3/5	9	0/15				
1D	4/5						
1E1	2/2						
1E2	2/2						
1E3	0/2						
1E4	0/2						
1F	3/5						
1G	5/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	14/15						
5	0/15						
6	0/15						

Date of Exam: 12-11-2025 Shift: 3rd Room No.: 29
Paper Code: A320902T Subject: Music vocal Year/Sem.: 3rd
Name of Candidate: Anushka Bajpai
Roll No.: 2 4 0 3 4 0 0 0 0 3 0

COE Facsimile

Signature of Invigilator

Signature of Candidate

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks

Total Marks in Words

A 3 2 0 9 0 2 T

Paper Code

Signature of Evaluator

Course: M.A. Music vocal (A320902T)

Session: 2025-26 Year/Semester: 2 (3rd sem)

Subject: Music vocal

Paper Code: A 3 2 0 9 0 2 T

Exam Date: 1 2 1 1 2 0 2 5

Name of Candidate: ANUSHKA BAJPAI

Father's Name: ANAND KUMAR BAJPAI

महाविद्यालय का कोड College Code: K N 1 5

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: K N 1 5

परीक्षा का प्रकार Type of Exam

संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex. Student ○

व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

11171094

A 3 2 0 9 0 2 T

Paper Code

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 4 0 0 0 0 1 3 9 4 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 3 4 0 0 0 0 3 0

पेपर कोड Paper Code: A 3 2 0 9 0 2 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ◍

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उ पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्र में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर क निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा क कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pap Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of dama in your answer script, if found than change the answer scr immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e Subject Code, Subject Name and Question of the Questi Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement the exam, so that it can be corrected in TIME. After that corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over pape should fill in status as Carry Over. Those appearing as E Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनाये क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लाये, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मैमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberal in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

-	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪
①	●	①	●	①	①	①	①	●	①	①
②	②	②	②	②	②	②	●	②	②	②
③	③	③	③	③	③	●	③	③	③	③
④	④	④	④	④	●	④	④	④	④	④
⑤	⑤	⑤	⑤	●	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤
⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	●	⑥
⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦
⑧	⑧	●	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧
⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	●

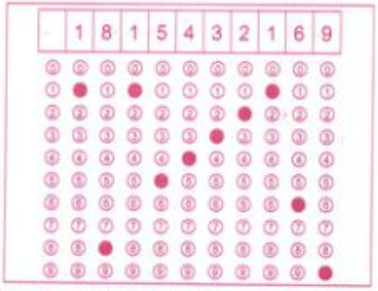

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three colum

Section-B

5. हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटकी संगीत पद्धति के स्वरों तथा रागों की तुलना :

1800 ई. के बाद से, विदेशी आक्रमण एवं प्रभाव के कारण भारतीय संगीत के स्वरूप में उत्तरीय व दक्षिण संगीत में कुछ भेद आने लगा। यद्यपि कुल स्वरूप समान व ज्यादा समानता बनी रही तब भी कुछ अन्तर दृष्टिगोचर होने लगे।

उत्तरी संगीत में सदैव ही एक या एक से अधिक विधाओं का सम्मिलन संगीत की नवीनता को बढ़ाता रहा जिससे उसका मूल स्वरूप बदलता रहा जबकी कर्नाटकी संगीतज्ञों ने अपने सांगीतिक शुद्धता एवं मूल स्वरूप को बचाकर रखना एवं उसी को आगे बढ़ाते रहना उचित समझा।

स्वर

उत्तरी एवं [दक्षि]ण - दोनों ही संगीत पद्धतियों में 22 श्रुतियाँ एवं नीचे के 'स' से तार 'स' तक 12 स्वरों का प्रचलन हैं।

किंतु स्वरों के नामों व स्थान में कुछ अंतर पाया जाता है।

उत्तरीय स्वर सिद्धांत में मूल (शुद्ध) स्वर मध्य में तथा कोमल नीचे व तीव्र ऊपर रहता है,

जबकी दक्षिण स्वर सिद्धांत में कोमल स्वरों का वर्णन नहीं मिलता है क्योंकि स्वर सबसे निचली श्रुति पर स्थित होता है।

उत्तरी स्वर	कर्नाटकी स्वर
सा	स
रे (कोमल रे)	शुद्ध रे
रे	शुद्ध ग (चतुश्रुति रे)
ग (कोमल ग)	साधारण ग (षटश्रुति रे)
ग	अन्तर ग
म	शुद्ध म
मं (तीव्र म)	प्रति म
प	प
ध (कोमल ध)	शुद्ध ध
ध	शुद्ध नि (चतुश्रुति ध
नी (कोमल नी)	कैशिक नि
नी	काकली नि
सां	सां

कर्नाटकी पद्धति के गायन में स्वरों को गमक के साथ लगाते हैं। स्वरों को एक स्वर ऊँचे का कण लेकर लगाना प्रचलित है। स्वरों की लगाने के ढंग में इस परिवर्तन से उत्तरी और दक्षिण गायन शैली भिन्न प्रतीत होती है।

दोनों ही पद्धतियों में मेल-थाट राग का प्रचलन है। 17 वीं ई. में वैंकटमुखी जी ने कर्नाटक पद्धति में 72 थाटों का

प्रावधान लाया जबकी उत्तरी पद्धति में 32 थाट बनाए गए। 1916 में भातखण्डे जी ने कुल 10 थाटों का प्रावधान लाया जो आज तक चलता आ रहा है।

राग

दोनों ही पद्धतियों का आरंभ मूल प्रबंध गायन था, जो समय के साथ लुप्त हो गया।

आधुनिक काल में बहुत से ऐसे राग हैं जिनके नाम एक हैं किन्तु स्वरूप अलग, जैसे -
उत्तरी भैरवी ⟶ दक्षिण तोड़ी (हनुमत तोड़ी)

कुछ ऐसे राग हैं जिनके स्वरूप समान हैं किन्तु नाम अलग, जैसे :—

उत्तरी		दक्षिणी
आसावरी	⟶	मुखारी
काफी	⟶	खरहरप्रिया
बिलावल	⟶	शंकराभरण

वहीं कई बार नाम, स्वरूप समान होने के बाद भी थाट में अन्तर होने से स्वरूप एक दम बदल जाता है रागों का व दो राग समान होने पर भी स्वरों को लगाने के ढंग में अंतर होने से रागों का स्वरूप एक दम अलग लगता है।

जहाँ दक्षिण संगीत मे मुखारी (आसावरी) को शुद्ध मेल मानते हैं वहीं उत्तरी संगीत में बिलावल (शंकराभरण) को।

Paper Code

04

समानता : [दोनो पद्धतियों में :-]

→ 22 श्रुतियों व 12 स्वरों का प्रचलन
→ शास्त्रीय एवं सुगम संगीत का भेद चलन
→ प्रबंध गायन से आरंभ
→ स्वरों के सप्तक में शुद्ध व विकृत स्वर
→ स्वरों की प्रधानता
→ आकार में आलाप

भिन्नता :-

उत्तरी	कर्नाटक
• स्वरों की प्रधानता	• स्वरों व शब्दों की प्रधा
• गायन शैलियाँ :- छोटा/बड़ा ख्याल, चतुरंग, धमार, ध्रुपद, तराना, ठुमरी आदि।	• गायन शैलियाँ :- तिल्लाना, जवाली, मध्यलय/द्रुत कृतिपद, आदि।
• बंदिश छोड़कर स्वच्छंद गायन	• निबद्ध गायन
• क्रियात्मकता की प्रधानता	• रचना की शुद्धता की प्रधानता।

अतः यद्यपि दोनो ही पद्धतियों में कुछ अंतर हैं परन्तु दोनो ही पद्धतियों का सांगीतिक मूल स्वरूप स्वरों की मधुरता व भाव पर आधारित हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Section-c

7. **वाद्यों का वर्गीकरण**

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में वाद्यों का प्रयोग प्राचीन काल से चला आ रहा है। महाभारत में वीणा तथा वेदों में दुदुम्भि से लेकर 'संगीत रत्नाकर' जैसे ग्रन्थों में वाद्यों का वर्णन किया गया है।

आदि काल से अब तक वाद्यों के कई वर्गीकरण किये गए किन्तु आधुनिक काल में सर्वमत प्राप्त वर्गीकरण कुछ इस प्रकार है :-

'संगीत रत्नाकर' के अनुसार :-

तत वाद्य

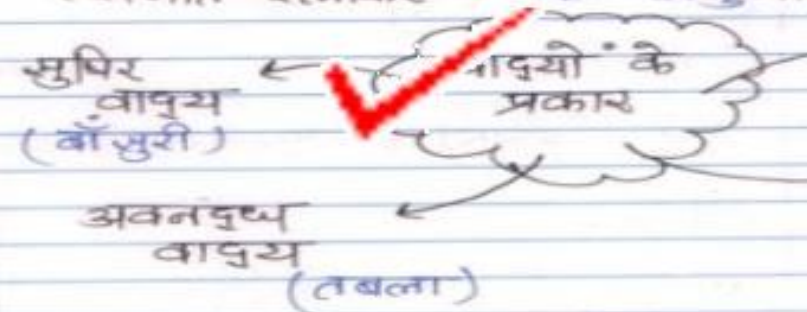

ऐसे वाद्य जो उनमें लगी तारों/तन्त्रों के कम्पन से ध्वनि उत्पन्न करें, वह तत वाद्य होते हैं। जैसे - सितार, गिटार, सरोद, वायोलिन आदि

Paper Code

06

Do Not Write anything in this Portion

तत् वाद्यों के प्रकार :

बजाने की विधि अनुसार :-

1. उँगली या मिजराब के तार पर आघात से बजने वाले। जैसे : सितार, गिटार, वीणा आदि
2. गज के तार पर घर्षण (घिसने) से बजने वाले। जैसे : वायोलिन, सारंगी आदि

परदे के :
1. पर्दे वाले → सितार
2. बिना पर्दे वाले → तानपुरा

2. सुषिर वाद्य

ऐसे वाद्य जो वायु के कम्पन से ध्वनि उत्पन्न करें, वह सुषिर वाद्य होते हैं। जैसे : बाँसुरी, नादस्वरम, हारमोनियम आदि

प्रकार :

1. हा[illegible] उँगली से छिद्र बंद/खोलने वाले
जैसे — बाँसुरी, नादस्वरम
2. चाबियों द्वारा छिद्र बंद/खोलने वाले
जैसे - सैक्सोफोन, क्लेरोनेट

1. मुख से वायु प्रवाहित करने वाले - बाँसुरी
2. पत्ती (यन्त्र) से वायु प्रवाहित करने वाले - हारमोनियम

3. अवनद्ध वाद्य

यह वह वाद्य होते हैं जो तने हुए चमड़े पर आघात होने से ध्वनि उत्पन्न करते हैं।
जैसे — तबला, पखावज, तबली, मृदंगम आदि

प्रकार :

हाथ से थाप/आघात करने वाले — तबला, पखावज
लकड़ी से आघात करने वाले — तबली, ढोल

यद्यपि वाद्यों का कार्य ताल देना होता हैं, कुछ वाद्य जैसे पखावज व मृदंग specifically उत्तरी तथा दक्षिणी संगीत में बजाए जाते हैं (respectively).

4. घन वाद्य

ऐसे वाद्य जो किसी ठोस वस्तु या लकड़ी के प्रहार से ध्वनि उत्पन्न करें, वह घन वाद्य।
जैसे - जलतरंग, काष्ठतरंग, मंजीरा, करताल आदि

प्रकार → किसी और वस्तु का आघात करने वाले :
जैसे - जलतरंग
→ दो हिस्सों में बंटे / खुद ही का आघात करने वाले
जैसे - करताल, मंजीरा आदि

बहुत से ऐसे वाद्य हैं जिनका वर्गीकरण इन्हीं categories में करना कठिन है किन्तु किसी न

किसी feature को ध्यान में रखकर उन्हें भी इन्हीं वर्गीकरण के अन्तर्गत स्थापित किया जाता है।

2 सुषिर वाद्य :

* बाँसुरी एक अत्यधिक लोकप्रिय व कर्णप्रिय वाद्य है जिसपर स्वर, गीत, शास्त्रीय संगीत आदि बजाया जाता है। बाँसुरी बजाकर भगवान श्री कृष्ण ने पूरी सृष्टि को मोह लिया। बाँसुरी के छिद्रों पर उँगलियों को रखकर वायु के प्रवाह को अनुशासित किया जाता है जिससे स्वरों की उत्पत्ति होती है। आधुनिक काल में पन्नालाल मज़ूमदार जी, श्री हरिप्रसाद चौरसिया जी आदि जैसे बाँसुरी वादक सुप्रसिद्ध हैं।

* हारमोनियम एक अत्यधिक लोकप्रिय वाद्य है। इसकी सीमा केवल सीखे - संगीत विद्वानों तक सीमित नहीं अपितु यह वाद्य मंदिरों से लेकर घरों में सामान्य पूजा-अर्चना के लिए भी गीत-भजन गाते समय प्रयोग किया जाता है। इसमें वायु के प्रवाह से air column में दबाव (air pressure) की भिन्नता से स्वर उत्पन्न होते हैं। इसे गायकी व वाद्यों के साथ स्वर देने व धुन निकालने के लिए प्रयोग किया जाता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Section-A

1. (A) अवनद्ध वाद्य

ऐसे वाद्य जो तने हुए चमड़े पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न करें उन्हें अवनद्ध वाद्य कहते हैं। इनका प्रयोग ज्यादातर ताल देने के लिए किया जाता है तथा इन्हें गीत बजाने के लिए नहीं प्रयोग करते हैं।

जैसे — तबला, मृदंगम, पखावज, तबली आदि

२ अवनद्ध वाद्यों का वर्णन :

- तबला → अत्यंत लोकप्रिय वाद्य है। इसका प्रयोग ख्याल गायन, भजन, गीत आदि विधाओं में वादन हेतु किया जाता है। इसके दो भाग होते हैं → बड़े मुँ वाला थाप के लिए व एक छोटे मुँ वाली चाटी। इसपर तीनताल, एकताल, झपताल आदि जैसी तालें तथा और भी, प्रसिद्ध रूप से बजती हैं। आजकल तबला वादकों का solo वादन भी प्रचलित हो रहा है जिसपर वह ठेका, परन, चारों पर वापसी आदि दिखाते हैं। सुप्रसिद्ध तबला वादक → अकरम खाँ जी, ज़ाकिर खाँ जी (late).

- पखावज → ध्रुपद धमार में बजने वाला वाद्य है जिसपर ज्यादातर [illegible]र, चारताल, शूलताल आदि तालें गाई-बजाई जाती हैं। इसका एक मुँह चौड़ा होता है जिस पर आटा लगाकर उसका resonance बढ़ाते हैं व दूसरा मुँह कुछ छोटा होता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

B. शारंगदेव जी ने एक तंत्री वीणा का वर्णन किया है। यह वीणा का एक लुप्त हो चुका प्रकार है जिसमें एक ही तंत्री अर्थात तार से स्वरों की उत्पत्ती की जाती थी।

C. उस्ताद अलाउद्दीन खान जी का संगीत जगत में असीम योगदान है। न सिर्फ इन्होंने ख्याल गायकी की खोज व प्रचार किया अपितु कई नए रागों की भी रचना करी।

D. बाँसुरी तथा शेहनाई सुषिर वाद्यों की श्रेणी में आते हैं।
सुषिर वाद्य अर्थात वह वाद्य जो प्रवाह की गई वायु के कम्पन से ध्वनि उत्पन्न करें। इन वाद्यों में बने छिद्रों पर उँगलियाँ रखकर उन्हें खोल/बंद करके वायु के कम्पन को अनुशासित किया जाता है जिससे ध्वनि अलग - अलग स्वरों/तीव्रता के रूप में बाहर आती हैं तथा गीत सुनाई देता है।

E. (ii) मंजीरा एक प्रकार का घन वाद्य है जो कांस धातु का बना होता है। तथा इसके दो भाग होते हैं जिनको आपस में आघात करके ध्वनि उत्पन्न की जाती है।
इसका उपयोग ताल देने के लिए किया जात

है। इसकी ध्वनि टंकार के समान होती है।
यह वाद्य मंदिरों, घरों के साथ-साथ
शास्त्रीय गायन में भी प्रयोग किया जाता है।

iv) विपंची वीणा एक अत्यन्त प्राचीन वीणा का
प्रकार है लालमणी जी के अनुसार।
अर्थ स्तोत्रों के अनुसार इसमें नौ (9) तार
होते थे। जबकि भरत जी के अनुसार इसमें
21 तार होते हैं।
शारंगदेव जी के अनुसार 5 तारों वाली
वीणा विपंची वीणा कहलाई।
यद्यपि इसकी बनावट को लेकर मतभेद हो;
इसका ज्यादातर शास्त्रों में वर्णन इसकी
महत्वता व existence की ओर संकेत करता है।

F. टाईम सिग्नेचर :

पाश्चात्य पद्धति में स्वर लिपि के काल मान को
दर्शाने के लिए विभाग के समान बार व डबल
बार का प्रयोग करके रचना को अवर्तनों में
निबद्ध करने को ही टाईम सिग्नेचर कहते
हैं। इसको क्लेफ में ही क्लेफ सिग्नेचर
के बगल में एक या दो लाइनें खींचकर
दर्शाते हैं। अर्थात ऐसे चिन्ह जो ताल को दर्शाएँ
उन्हें टाईम सिग्नेचर कहते हैं।

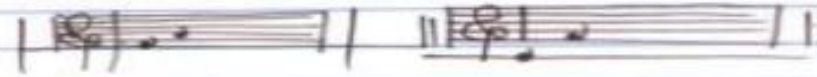

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

1. हिन्दुस्तानी स्वर :

सा → षड्ज
रे → कोमल रिषभ
रे → शुद्ध रिषभ
ग → कोमल गंधार
ग → शुद्ध गंधार
म → शुद्ध मध्यम
मं → तीव्र मध्यम
प → पंचम
ध → कोमल धैवत
ध → शुद्ध धैवत
नी → कोमल निषाद
नी → शुद्ध निषाद

5. तीन स्वरों के मुर्की को मोडरेन्ट कहते हैं।

मुर्की में स्वरों की उत्थान ही ऊपर के स्वरों की ओर तो वह अपर मोडरेन्ट कहलाता है।
जैसे - रे ग म , ग म ध

मुर्की में स्वरों का प्रवाह एक-एक कर नीचे के स्वरों की ओर ही तो वह लोअर मोडरेन्ट कहलाता है।
जैसे - म ग रे , नी ध प

3. स्वर को ... के स्वर के कण से छूकर आना , ... पाश्चात्य संगीत पद्धति में

कण स्वर कहलाता है।
इसे अनेक चिन्हों से दर्शाया जाता है (.) (ऽ)
तथा पहला स्वर जिसका कण लिया जाए वह
ज्यादातर 2/3 हिस्सा मूल स्वर का ले-
लेता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion